(2) विभिन्न स्तरों पर संस्कृत शिक्षा की पद्धति, पाठ्यक्रमों, शिक्षण तथा ऐसे ही अन्य कार्यकलापों में समन्वय, पाठ्यविवरणों, परीक्षाओं और उपाधियों के मानकीकरण, विभिन्न प्रकार के अध्यापकों की योग्यताएं और उन के प्रशिक्षण की व्यवस्था के सम्बन्ध में ;

(3) शिक्षा की पाठशाला पद्धति और ग़ैर-सरकारी तौर पर संचालित अनुसंधान संस्थानों के विकास और सुधार के लिए अपनाई जाने वाली प्रणालियों के सम्बन्ध में ;

(4) प्रार्थना किए जाने पर, उच्च पाठशालाओं में अनुसंधान विभाग खोलने और पाठशालाओं के विद्यार्थियों को अनुसंधान छाववृत्तियां तथा वृत्तिकाएं प्रदान करने के प्रश्न पर ;

(5) सुधरी हुई संस्कृत पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण और प्रकाशनार्थ अपनाई जाने वाली विधि के संबंध में ;

(6) पंडितों को राज्य-सम्मान और पुरस्कार प्रदान करने तथा ऐसे सम्मानों और पुरस्कारों के लिए संस्कृत विद्वानों के नाम सुझाने के सम्बन्ध में ; और

(7) मण्डल को भेजे गए, संस्कृत के विकास और प्रचारार्थ सहायक-अनुदान से सम्बन्धित मामलों पर ।

भारत सरकार के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त, मंडल के सभी सदस्य, प्रायः प्रख्यात संस्कृत विद्वानों में से नियुक्त किये जाते हैं ।

संस्कृत संगठनों को सहायता

1809. **श्री रामेश्वरानन्द :**
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री ओंकार लाल बेरवा :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय सरकार ने 1963-64 में स्वयंसेवी संस्कृत संगठनों को कितनी रकम दी ; और

(ख) उस का क्या ब्यौरा है ?

शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भक्त दर्शन) : (क) 5,90,372 रुपये ।

(ख) विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है । **[पुस्तकालय में रखा गया, देखिये संख्या एल0 टी0--3724/64]** ।

गुरुकुलों को सहायता

1810. **श्री रामेश्वरानन्द :**
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री ओंकार लाल बेरवा :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में विभिन्न गुरुकुलों की उन्नति के लिये केन्द्रीय सरकार प्रति वर्ष कितनी रकम का अनुदान देती है ;

(ख) किन-किन गुरुकुलों को केन्द्रीय सरकार कोई अनुदान नहीं देती ; और

(ग) इस के क्या कारण हैं ?

शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भक्त दर्शन) : (क) से (ग). संस्कृत के प्रसार के लिए संस्कृत गुरुकुलों को वित्तीय सहायत